ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मा विभेर्न मरिष्यसि। अथर्ववेद-5/30/8
हे आत्मन्! डर मत, तू मरेगा नहीं।
O soul! be not araid ! you will not die.

वर्ष 38, अंक 19 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 23 मार्च, 2015 से रविवार 29 मार्च, 2015
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्द : 192 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली (राज्य) के तत्त्वावधान में दिल्ली की समस्त आर्य समाजों एवं आर्य संस्थाओं के सहयोग से

141वां आर्य समाज स्थापना दिवस एवं नव संवत्सर समारोह उत्साह पूर्वक संपन्न

संसार की सबसे पुरानी ध्वनि ओ३म् और ग्रंथ वेद है: डा. सत्यपाल सिंह सांसद

भारतीय वैदिक सभ्यता और संस्कृति में पर्वों का विशेष महत्व है। पर्व खुशी, प्रसन्नता और उत्साह का ही नाम है। जिस व्यक्ति के जीवन में नित्य प्रसन्नता और उत्साह होता है, मानों देखों उसका जीवन पर्वों से भरा होता है। वैदिक युग से ही भारत में पर्वों की उत्कृष्ट परम्परा रही है, उसी परम्परा को विशुद्ध एवं संस्कृत रूप प्रदान करते हुए आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली (राज्य) ने 'नव सृष्टि संवत्सर 1960853116, विक्रमी संवत् 2072 तथा आर्य सामज के 141 वें स्थापना दिवस को संयुक्त रूप से एक वृहद् समारोह के रूप में दिल्ली के ओपन एअर थियेटर तालकटोरा स्टेडियम में धूम-धाम से मनाया जिसमें हजारों की संख्या में पहुँचकर दिल्ली क्षेत्र के आर्य जनों ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई और कार्यक्रम सफल बनाने में सम्यक सहयोग प्रदान किया, जिसमें दिल्ली एवं आसपास के गणमान्य महानुभावों, उधोगपतियों,

"चैत्र शुक्ल प्रतिपदा विक्रमी संवत् 2072 समस्त भारतीयों के लिए हो मंगलमय" : महाशय धर्मपाल

समाजसेवियों तथा राजनेताओं ने उपस्थित आर्यजनों का मार्ग दर्शन किया और कार्यक्रम की सफलता एवं आयोजन के लिए आयोजकों को बधाई और नव वर्ष की शुभकामनाएँ दी। कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य इन्द्रदेव जी के ब्रह्मत्व में नवसम्वत्सर प्रारंभ एवं आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में विशेष यज्ञ से हुआ। यजमान के रूप में श्रीमती निधि एवं श्री संदीप नरूला श्रीमती सन्तोष एवं श्री विक्रम नरूला श्रीमती सुनीता एवं श्री देवेन्द्र जावां, श्रीमती रश्मि एवं श्री यज्ञदत्त जी, श्रीमती एवं श्री विकास नारंग जी उपस्थित रहे यज्ञ संयोजक श्री मदनमोहन सलूजा जी। तत्पश्चात् ध्वजारोहण प्रसिद्ध उधोगपति श्री प्रवीण तायल जी के करकमलों द्वारा किया गया। सार्वजनिक सभा का शुभारंभ महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.) की अध्यक्षता में, दीप प्रज्वलन से हुआ। महाशय धर्मपाल जी श्री सत्यानन्द आर्य समाज सेवी समारोह के मुख्यातिथि ...शेष पृष्ठ 4 पर

रामनवमी पर विशेष

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का प्रेरक स्वरूप

इस देश का सौभाग्य है कि यहां अनेक ऋषि-मुनि, सन्त-योगी, तपस्वी, त्यागी और बलिदानी महापुरुषों ने जन्म लिया है। महापुरुष किसी देश की सबसे बड़ी सम्पदा होते हैं। उन्हीं महापुरुषों की परम्परा में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम का स्मरण और नाम बड़ी श्रद्धा, भक्ति, सम्मान तथा आदर से लिया जाता है। श्रीराम भारतीय जन-जीवन में धर्मभावना के प्रतीक हैं। श्रीराम एक आदर्श महापुरुष थे। उनका व्यक्तित्व और कृतित्व महान था। श्रीराम का चरित्र और आदर्श जीवन भारत की सीमाओं को लाँघकर विदेशियों के लिए भी शान्ति, प्रेरणा और नवजीवन का दाता बनता जा रहा है। आज शिक्षित अशिक्षित सभी उठते-बैठते, सोते-जागते, खाते-पीते राम का नाम लेकर ही अपनी धार्मिक भावना प्रकट करते हैं।

रामायण के आरम्भ में श्रीरामचन्द्र जी के जन्म का वृत्तान्त है। राजा दशरथ ने पुत्रेष्टि यज्ञ किया। इसमें अनेक विद्वानों, ब्राह्मणों और ऋषि-मुनियों ने भाग लिया। यज्ञ सम्पन्न हुआ। दशरथ का घर सन्तान- सुख से घर भर गया। इससे बोध होता है व प्रेरणा मिलती है कि यज्ञ मानव की सभी कामनाओं की पूर्ति का श्रेष्ठ साधन रहा है। यज्ञ हमारी संस्कृति की बहुत बड़ी विशेषता है। यज्ञ के द्वारा अनेक रोग दूर होते हैं और वातावरण शुद्ध व पवित्र बनता है। यज्ञ की अनन्त महिमा है। राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न बड़े हुए तो गुरुकुल ...शेष पृष्ठ 5 पर

भारतीय इतिहास में श्री राम चंद्र जी के उत्कृष्ट जीवन चरित्र ने जहां उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम की पदवी से अलंकृत किया वहीं भारतीय जनमानस में युगों-युगों तक प्रेरणा स्त्रोत बने रहेंगे। इसी परिपेक्ष्य में डॉ. महेश विद्यालंकार जी ने भारतीय युवा पीढ़ी को सन्मार्ग दर्शाते हुए श्री राम चंद्र जी के जीवन से प्रेरणा लेकर जीवन को उन्नत बनाने हेतु रामायण की सौद्देश्य विवेचना प्रस्तुत की है। यह लेख पूर्व में भी आर्य संदेश में प्रकाशित किया जा चुका है। इसकी प्रासंगिकता को ध्यान में रखते हुए रामनवमी के पर्व पर पुनः प्रकाशित किया जा रहा है। **- संपादक**

महाशय धर्मपाल जी के 92वें जन्मदिवस पर

व्यक्तित्व और कृतित्व समारोह संपन्न

विस्तृत रिपोर्ट अगले अंक में

वेद स्वाध्याय

करूणासागर! द्वेष की ज्वाला बुझा दें

ऋषि- **वत्स आग्नेय**।। देवता- **अग्निः**।। छन्दः - **निचृद्गायत्री**।।

शब्दार्थ- क्षितीनाम्= मनुष्यों के **वृषभाय**= अभीष्टों को बरसानेवाले **अग्नये**= अग्निस्वरूप प्रभु के लिए **वाचम्**= अपनी वाणी को **प्र ईरय**= प्रकृष्टता से प्रेरित कर। वह **नः**= हमें **द्विषः**= द्वेषों से **अति पर्षत्**= पार लागएगा।

प्राग्नये वाचमीरय वृषभाय क्षितीनाम्।
स नः पर्षदति द्विषः।। ऋ0 10/187/1

विनय : - हे मनुष्य! क्या तू चाहता है कि अब तू द्वेष से पार हो जाए? क्या तू अपने मनुष्य भाइयों से द्वेष कर-करके और बदले में उनके द्वेष को पा-पाकर तंग आ चुका है? तूने अपने सुख में बाधक समझ न जाने कितनों से द्वेष किया है, पर जितना ही तूने उनसे द्वेष किया है-वैर का बदला वैर से दिया है-क्या उतना ही वह द्वेष बढ़ता नहीं गया है? ओह! इस बदले की, प्रतिद्वेष की प्रक्रिया से द्वेष इतना बढ़ता गया है कि तू आज अपने ही बनाये एक द्वेष-सागर में घिर गया है। यदि तू अब पूरा व्याकुल हो चुका है और चाहता है इस द्वेष-चक्र से पार हो जाए तो तू उठ और जगत में व्यापक अपने उस अग्निदेव तक अपनी वाणी को पहुंचा, जो सब मनुष्यों की कामनाओं को पूरा करनेवाला है। अरे, वह तो 'वृषभ' है, हम पर करूणा करके अभीष्टों को बरसा रहा है। केवल उस तक अपनी आवाज पहुंचाने की देर है कि वह तेरी कामना पूरी कर देगा। यदि यह इच्छा हार्दिक है तो निश्चय ही तेरी प्रार्थना, तेरी पुकार, वेग से, प्रकृष्टता से वहां पहुंचेगी। यदि वाणी की प्रकृष्टता से प्रेरित करने का हम में सामर्थ्य हो तो प्रार्थना की वाणी उस अग्निदेव को पहुंचकर उससे क्या नहीं करा सकती, किस कामना की पूर्ति नहीं करा सकती! हमारी कामना को पूरा करने की सामर्थ्य उसी में है- केवल उसी में है। वही हमें द्वेष-सागर से पार करेगा। इसलिए तू अपने सुख में बाधक समझकर अब किसी से द्वेष न कर, किंतु सुख के बरसानेवाले उस प्रभु से प्रार्थना कर और फिर देख कि द्वेष कहाँ है? प्रार्थना द्वारा उस प्रभु के सम्मुख पहुंचते ही सब द्वेष समाप्त हो जाएगा।

- आचार्य अभय देव

ग्रंथ परिचय

वेदविरूद्धमत खंडन

प्रश्न 1: वेदविरूद्धमत खंडन नामक ग्रंथ में किस मत का खंडन किया गया है?

उत्तर: इस ग्रंथ में वल्लभ मत का खंड किया गया है। इस पुस्तक का दूसरा नाम बल्लभाचार्य मत खंडन भी है।

प्रश्न 2: वल्लभ मत कौन-सा था?

उत्तर: इस मत में वल्लभ नामक पुरूष को गुरू मानकर उनके ग्रंथों के आधार पर आचरण किया जाता था।

प्रश्न 3: स्वामी जी ने इसका खंडन क्यों किया?

उत्तर: यह मत पूर्णतः वेदविरूद्ध सिद्धांतों का प्रतिपादक था। वल्लभ जो मृत हो चुके हैं, उनका आचार्य होना संभव ही नहीं क्योंकि जो शिष्य को कल्प-सूत्र, वेदांत सहित वेद पढ़ावे वही आचार्य हो सकता है और मरणोपरांत पढ़ाना संभव नहीं। दूसरा, इस मत में श्री कृष्ण को भगवान माना गया है, जो कि असत्य है। इसी प्रकार की पाखंड युक्त बातें इस मत में फैलाई गई थीं।

प्रश्न 4: स्वामी जी ने इसका खंडन किस रूप में किया?

उत्तर: इस मत के सभी सिद्धांतों व ग्रंथों को लेकर, उनमें प्रश्न उठाकर उनका खंडन किया।

प्रश्न 6: इस मत के ग्रंथ कौन-कौन से हैं?

उत्तर: 'सिद्धांत रहस्य', 'शुद्धाद्वैतमार्तण्ड', 'सत्सिद्धान्तमार्तण्ड', विद्वन्मंडन, 'अणु भाष्य' 'रस भावना', आदि ग्रंथ इस मत के माने जाते हैं।

उत्तर: यह खंडनात्मक ग्रंथ गुजराती, हिंदी और संस्कृत तीनों भाषाओं में है व संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद महर्षि के शिष्य भीमसेन शर्मा जी ने और गुजराती में अनुवाद महर्षि के प्रमुख शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा ने किया।

प्रश्न 7: यहां तो केवल वल्लभमत का खंडन है, फिर 'वेदविरूद्ध' मत खंडन यह नाम क्यों रखा गया है?

उत्तर: पहले तो स्वामी जी ने वल्लभमत के सभी सिद्धांतों का वेद एवं युक्तियों के आधार पर विस्तार से खंडन किया है। अंत में उन्होंने लिखा है कि जैसे वेद और युक्ति से विरूद्ध वल्लभ का सम्प्रदाय है, वैसे ही शैव, शाक्त, गाणपत्य, सौर और वैष्णवादि सम्प्रदाय भी वेद और युक्ति से विरूद्ध ही हैं। इस कथन से वेद के विरूद्ध सभी मतों व सम्प्रदायों का स्वतः खंडन हो जाता है।

प्रश्न 8: इसकी रचना महर्षि ने कब की?

उत्तर: इसकी रचना संवत् 1931, कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की अमावस्या, मंगलवार के दिन पूर्ण हो गई थी।

प्रश्न 9 : इस पुस्तक का क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर: महर्षि के जीवनचरित को पढ़ने से पता चलता है कि इस पुस्तक के जबरदस्त प्रभाव के कारण वल्लभ सम्प्रदाय के अनुयायियों ने अनेक बार महर्षि के प्राण हरण का प्रयत्न किया।

-साभार, महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

प्रेरक प्रसंग

ओ३म् की महिमा

यम और नचिकेता की कथा तो आपने सुनी है। यम ने अपने घर में आये मेहमान से तीन वर माँगने के लिए कहा। नचिकेता ने दो वर माँग लिये। अपने लिए नहीं, अपितु दूसरों के लिए। यम ने कहा-'' कुछ अपने लिए भी तो माँग!'' नचिकेता ने कहा- ''मेरे लिए ही वर देना चाहते हो तो बताओ कि वह क्या है, जिसे ईश्वर कहते है? यम ने कहा- ''यह न पूछ। कोई और वस्तु माँग ले। मैं तुझे बेअन्त धन और दौलत दे सकता हूँ। सारी पृथ्वी का राज दे सकता हूँ। दीर्घायु दे सकता हूं। सुन्दर स्त्रियाँ दे सकता हूँ।'' भोग-विलास के सामान दे सकता हूँ। आजकल का कोई नवयुवक होता तो शायद कहता-'' ला, यही दे दे।'' परन्तु नचिकेता ने कहा-''नहीं, यह सब-कुछ मुझे नहीं चाहिए, यह सब-कुछ नाश होने वाला है। मुझे वह दे, जो कभी नाश नहीं होता। अन्त में मरना है मुझे। मरने के पश्चात् तेरे पंजों में न फँसूँ, वह मार्ग बता मुझे।''

जब वह किसी भी उपाय से नचिकेता को नहीं मना सका, जब किसी भी रीति से उसका हठ दूर नहीं कर सका, तो बोला:

सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति तपाꣳसि सर्वाणि च यद्वदन्ति।
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्य चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेणब्रवीम्योमित्येतत्।।

''सब वेद जिस महान् पद का वर्णन करते हैं, सब तपस्वी जिसकी बात कहते हैं, जिसकी इच्छा से ब्रह्मचारी अपने व्रत को धारण करते हैं, उसे संक्षेप में तेरे सामने कहता हूँ- ओ३म् है वह।''

आगे चलकर फिर उसने कहा-

एतद्ध्येवाक्षरं ब्रह्म ह्येतद्ध्येवाक्षरं परम्।
एतद्ध्येवाक्षरं ज्ञात्वा यो यदिच्छति तस्य तत्।।

''वास्तव में यही वह अक्षर है, जो ब्रह्म है। निश्चित रूप से यही अक्षर परम है। इसको जानकर जाननेवाला सब-कुछ पाता है, जिसकी वह इच्छा करता है।'' इससे भी आगे चलकर उसने कहा-

एतदालम्बनं श्रेष्ठं एतदालम्बनं परम्।
एतदालम्बनं ज्ञात्वा ब्रह्मलोके महीयते।।

'' इसका आसरा सबसे बड़ा है। इसका आसरा सबसे ऊपर है। इसका आसरा लेकर आसरा लेनेवाला ब्रह्मलोक में आनन्द और महिमा प्राप्त करता है।'' **साभार-बोध कथाएं**

आर्य सन्देश पत्र के स्वामित्व आदि सम्बन्धी विवरण

फार्म 4 नियम 8
(प्रेस एण्ड रजिस्ट्रेशन आफ बुक एक्ट)

प्रकाशक का नाम	: दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
प्रकाशन की अवधि-	: साप्ताहिक
प्रकाशन का समय	: प्रति बृहस्पतिवार एवं शुक्रवार
मुद्रक का नाम	: धर्मपाल आर्य
क्या भारत का नागरिक है	: हाँ
मुद्रक का पता	: दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
प्रकाशक का पता	: पूर्ववत्
सम्पादक का नाम	: धर्मपाल आर्य
क्या भारत का नागरिक है	: हाँ
सम्पादक का पता	: पूर्ववत्
उन व्यक्तियों के नाम पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूंजी के 1 प्रतिशत से अधिक के साझेदार/हिस्सेदार हों	: दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

मैं धर्मपाल आर्य इस लेख पत्र के द्वारा घोषणा करता हूं कि उपर्युक्त विवरण जहां तक मेरा ज्ञान और विश्वास है, सही है। **धर्मपाल आर्य, प्रकाशक एवं मुद्रक**

वेद और कुरान फैसला करते है कितने दूर कितने पास

वेद संसार का सबसे प्राचीन ग्रंथ ही नहीं अपितु सृष्टि का सबसे वैज्ञानिक ग्रंथ और ईश्वर की वाणी है। वैदिक सभ्यता के आधार पर ही नव सृष्टिसंवत्सर प्रारंभ होने की सप्रमाण विवेचना दे रहे हैं। डा. विवेक आर्य जी के इस लेख को आर्य संदेश के इस अंक में पाठकों के ज्ञानार्थ प्रकाशित किा जा रहा है। **-संपादक**

दिल्ली पुस्तक मेले में कुछ मुस्लिम भाइयों द्वारा एक स्टाल लगाकर यह प्रचारित किया जा रहा है कि वेद और कुरान दोनों दूर नहीं अपितु पास है और दोनों ईश्वर या अल्लाह द्वारा प्रदत्त धार्मिक पुस्तक है। दरअसल यह मानसिक कुश्ती विश्वस्तर पर इस्लामिक आतंकवाद के कारण इस्लाम के प्रति लोगों की नकारात्मक धारणा को बदलने का प्रयास मात्र है जिससे कुछ युवा हिन्दुओं को भ्रमित किया जा सके।

सामान्य हिन्दू समाज नियमित स्वाध्याय की कमी के चलते धर्म के वास्तविक स्वरुप से प्राय अनभिज्ञ ही है और ऐसे में यह प्रयास कुछ न कुछ फल दे सकता है। मगर सत्य के ग्रहण एवं असत्य के त्याग के लिए सर्वदा उद्यत रहने वाले स्वामी दयानंद के शिष्य पुरुषार्थ करने का संकल्प लिए हुए है। उसी पुरुषार्थ को सिद्ध करने के लिए इस लेख के माध्यम से कुछ शंकाओं के माध्यम से वेद और कुरान कितने दूर और कितने पास है यह जानने का प्रयास करेंगे।

1. वेद ईश्वरीय ज्ञान है जबकि कुरान मनुष्यकृत ज्ञान है। वेद सृष्टि के आरम्भ में मनुष्य जाति को प्राप्त हुए जबकि कुरान करीब 1400 वर्ष पहले मिला। इस्लामिक मान्यता के अनुसार कुरान से पहले तौरेतए जबूर और फिर इंजील का प्रकाश हुआ और अंत में कुरान का प्रकाश हुआ। कुरान का प्रकाश करते समय अल्लाह द्वारा पहले दिए ज्ञान को निरस्त कर दिया गया। एक प्रश्न पर हमारे मुस्लिम मित्र सदा मौन धारण कर लेते हैं जब उनसे पूछा जाता है की ईश्वर का अपने दिए ज्ञान को तौरेतए जबूरए इंजील के माध्यम से बार बार निरस्त कर पुनः स्थापित करने की क्यों आवश्यकता पड़ती हैं और कुरान को अंतिम पुस्तक किस आधार पर माना गया है। जब निरस्त करना ही था तो फिर पहले ही इस कमी को दूर क्यों नहीं कर दिया जिसे बाद में कुरान के माध्यम से पूरा करना पड़ा। वेद का सृष्टि के आदि में आना और अंत तक रहना सदा एक समान रहना और उसमें कोई परिवर्तन न होना सत्य के निकट अधिक प्रतीत होता है। इसलिए वेद और कुरान में पर्याप्त दूरी है।

2. वेद संसार की अज्ञानता नष्ट करने एवं मनुष्यों में द्वेष भाव समाप्त कर एकता का सन्देश देते हैं। वेद मानव से लेकर समस्त पशु पक्षियों को भी मित्र भाव से देखने का सन्देश देता है जबकि कुरान में अनेक आयतें विवादस्पद है जो गैर मुस्लिमों के कत्ल उनकी संपत्ति के हरण आदि का सन्देश देती है।

जिनके प्रभाव से सम्पूर्ण पृथ्वी का शायद ही कोई कोना होगा जहाँ पर आतंकवाद के नाम व्यापक हिंसा न हो रही हो। इसलिए वेद और कुरान में पर्याप्त दूरी है।

3. वेद ईश्वर को निराकार एवं सर्वव्यापक मानता है जबकि कुरान ईश्वर को सातवें आसमान पर वास करने वाला साकार एवं एकदेशीय मानता है। निराकार सत्ता इस सर्वदेशीय एवं सर्वव्यापक हो सकती है साकार सत्ता एकदेशीय एवं सीमित रहेगी। इसलिए वेद और कुरान में पर्याप्त दूरी है।

4. वेद में विशुद्ध एकेश्वरवाद अर्थात ईश्वर एक है का सन्देश है जबकि कुरान में कहने को अल्लाह एक है मगर अल्लाह और आदम के बीच में फरिश्ते पैगम्बर अंतिम रसूल और न जाने क्या क्या है। वेद आत्मा और मनुष्य के मध्य कोई मध्यस्थ नहीं मानता क्यूंकि वेद के अनुसार ईश्वर समस्त आत्माओं में अंतर्यामी है। जबकि कुरान पैगम्बरए रसूल आदि को मनुष्य और ईश्वर के मध्य मध्यस्त मानता है एवं मध्यस्थ की सिफारिश से ईश्वर का प्रभावित होना भी मानता है। यह कुरान के ईश्वर की अन्य पर निर्भरता सिद्ध करता है जबकि वेदों का ईश्वर किसी पर भी आश्रित नहीं है। इसलिए वेद और कुरान में पर्याप्त दूरी है।

5. वेद का ईश्वर कर्मों का फल तत्काल कुछ समय पश्चात अथवा जन्मों जन्मों तक देता है जबकि कुरान का ईश्वर क़यामत तक इन्तजार करवाता रहता है। यह अत्याचार नहीं तो और क्या है कि चिरकाल तक आत्माओं को केवल बंदीगृह में कैद रहकर अपनी पेशी होने की प्रतीक्षा करनी पड़ती है।

किसी के धनी घर में पैदा होने अथवा किसी के निर्धन घर में पैदा होने पर किसी के स्वस्थ अथवा किसी के रोगी पैदा होने का अंतर पूर्वजन्म के कर्मों के आधार पर समझा जा सकता है मगर इस्लाम की मान्यता के अनुसार अल्लाह की मर्जीअल्लाह की इच्छा आदि के आधार पर उसे समझा नहीं जा सकता क्योंकि वेद का ईश्वर न्यायकारी एवं दयालु है और किसी से पक्षपात नहीं करता। अगर जो यह माने अल्लाह परीक्षा ले रहा है तो भी अल्लाह अज्ञानी माना जायेगा क्योंकि उसे परीक्षा का फल नहीं मालूम इसलिए वह परीक्षा ले रहा है। अल्लाह या ईश्वर का अज्ञानी होना भी संभव नहीं है। इसलिए वेद और कुरान में पर्याप्त दूरी है।

6. वेद के अनुसार मनुष्य जीवन का उद्देश्य सभी दुखों से छूटकर मोक्ष के आनंद को ग्रहण करना हैं जबकि कुरान के ईश्वर के अनुसार मनुष्य जीवन का उद्देश्य हूरों का भोग मीठे पानी के चश्में शराब का दरिया है। अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है। इसलिए वेद और कुरान में पर्याप्त दूरी है।

7. वेद के अनुसार सृष्टि की उत्पत्ति अभाव से नहीं हुई अपितु प्रकृति अपनी सम अवस्था में विद्यमान थी जिससे ईश्वर ने सृष्टि का निर्माण किया जबकि कुरान के ईश्वर ने श्कुनश् कहा और उससे अभाव से सृष्टि की उत्पत्ति हो गई। अभाव से भाव की उत्पत्ति होनी अवैज्ञानिक एवं असंभव है। अवैज्ञानिक पक्ष होने के कारण से वेद और कुरान में पर्याप्त दूरी है।

8. वेद में ईश्वर आत्मा और प्रकृति तीन अनादि तत्त्व है जबकि कुरान में केवल ईश्वर या अल्लाह को अनादि बताया गया है। अगर केवल अलाह अनादि है तो अलाह द्वारा सृष्टि की रचना का उद्देश्य क्या रह गया। जब सब कुछ ईश्वर है तो फिर आत्मा में अज्ञानता का प्रवेश कहाँ से हुआ इस पर इस्लामिक विद्वान स्पष्ट उत्तर नहीं दे पाते। इसलिए वेद और कुरान में पर्याप्त दूरी है।

9. वेद का ईश्वर वेद को तर्क की कसौटी पर परखने का समुचित अवसर देता है जबकि कुरान का ईश्वर मजहब में अक्ल का दखल नहीं देता। युक्ति या तर्क की कसौटी पर वह ज्ञान सदा खरा उतरेगा जो सत्य पर आधारित होगा जबकि इस्लामिक शरिया के अनुसार कुरान या रसूल पर शंका करने वाला दंड का पात्र माना गया है। इसलिए वेद और कुरान में पर्याप्त दूरी है।

10. वेद में एक भी सिद्धांत एक दूसरे से विरोधाभास नहीं रखता जबकि कुरान में अनेक एक दूसरे का विरोध दर्शाने वाली बातें भरी पड़ी हैं। इसलिए वेद और कुरान में पर्याप्त दूरी है।

वेद और कुरान में पर्याप्त अंतर है अधिक जानकारी के लिए स्वामी दयानंद रचित सत्यार्थ प्रकाश एवं पंडित चमूपति रचित चौदहवीं का चाँद पढ़िए। दोनों पुस्तकें दिल्ली में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा 15ए हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 आर्यसमाज से मिलेगी।

-डॉ. विवेक आर्य

शहीद दिवस
23 मार्च पर विशेष

हंसते-हंसते फांसी पर झूल गए ये देशभक्त

अमर शहीद भगतसिंह का जन्म 27 सितम्बर 1907 को बंगा, लायलपुर, पंजाब (अब पाकिस्तान) हुआ था व 23 मार्च, 1931 को इन्हें दो अन्य साथियों सुखदेव व राजगुरू के साथ फांसी दे दी गई। भगत सिंह का नाम भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अविस्मरणीय है। भगत सिंह देश के लिए जीये और देश ही के लिए शहीद भी हो गए। 24 अगस्त 1908 को पुणे जिले के खेड़ा गांव (जिसका नाम अब राजगुरू नगर हो गया है) में पैदा हुए शहीद राजगुरू का पूरा नाम शिवराम हरि राजगुरू था। आपके पिता का नाम श्री हरि नारायण और माता का नाम

पार्वती बाई था। भगत सिंह और सुखदेव के साथ ही राजगुरू को भी 23 मार्च 1931 को फांसी दी गई थी।

राजगुरू स्वराज मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और मैं उसे हासिल करके रहूंगा का उद्घोष करने वाले लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के विचारों से अत्यधिक प्रभावित थे। सुखदेव का जन्म 15 मई, 1907 पंजाब में हुआ था। 23 मार्च 1931 को सेंट्रल जेल, लाहौर में भगतसिंह व राजगुरू के साथ इन्हें भी फांसी दे दी गई। सुखदेव का नाम भारत के अमर क्रांतिकारियों और शहीदों में गिना जाता है। आपने अल्पायु में ही देश के लिए जान कुर्बान कर दी। सुखदेव का पूरा नाम सुखदंव थापर था। इनका नाम भगत सिंह और राजगुरू के साथ जोड़ा जाता है और इन तीनों की तिकड़ी भारत के इतिहास में सदैव याद रखी जाएगी। तीनों देशभक्त क्रांतिकारी आपस में अच्छे मित्र थे और देश की स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वत्र न्यौछावर कर देने वालों में से थे।

23 मार्च 1931 को भारत के इन तीनों वीर नौजवानों को एक साथ फांसी दी गई और 23 मार्च को शहीदी-दिवस के रूप में याद किया जाता है।

पृष्ठ 1 का शेष

श्री शिव भगवान लाहोटी जी, मुख्य वक्ता डॉ. सत्यपाल सिंह (सांसद लोकसभा) एवं श्री राजेन्द्र कुमार (एम.डी.एच.) परिवार द्वारा दीप प्रज्वलित कर समारोह कर शुभारंभ किया गया। आचार्य यशपाल जी शास्त्री (प्रीतविहार) ने अपने उद्बोधन में कहा कि आर्य समाज की स्थापना से पूर्व भारत में पाखण्ड और अन्धविश्वास का बोल बाला था। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पाखण्ड और अंधविश्वास के उन्मूलन और सत्य ज्ञान के प्रकाश के लिए ही आर्य समाज की स्थापना की हैं उन्होंने कहा कि हमारे देश की भूत पूर्व प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने अजमेर की जनसभा में ये स्वीकार किया था कि ''यदि आर्य समाज और स्वमी दयानन्द सरस्वती न होते तो मेरे जैसी विद्यवा स्त्री को इस देश को प्रधानमंत्री नहीं बनने दिया जाता।''

आचार्य ब्र. सनत् कुमार जी आर्ष शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित हैं, जो देश विदेश में नेट के माध्यम से आर्य समाज के प्रचार-प्रसार कर रहे है। उन्होंने कहा कि- आज ही के दिन मानव का प्रादुभाव 196,08,53115 वर्ष पूर्व हुआ आज ही के दिन महाराजा विक्रमाद्वित्य ने शक हुणों को प्रारास्त कर नव संवत्सर विक्रमी का प्रारंभ किया था। आज ही दिन के 1875 ई. में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की। इसके पश्चात् आचार्य जी ने सांख्य दर्शन के आधार पर सृष्टि की प्रारंभिक रचना की स्थिति को एक चित्रावली के माध्यम से समझाया।

मुख्य वक्ता डॉ. सत्यपाल सिंह जी ने अपने उद्बोधन में नव वर्ष की उपयुक्तता तथा महता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ऋतुनां वसंतम् मुखम् वसंत ऋतु ऋतुओं का मुख्य है, राजा है, और इस वसंत ऋतु में ही हमारा नस संवत्सर प्रारंभ होता है। यह एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है। नव की वैज्ञानिकता को युगों की गणना के साथ जोड़ते हुए वैदिक वैज्ञानिकता को युगों की गणना के साथ जोड़ते हुए वैदिक विज्ञान की सुन्दर व्यख्या करते हुए कहा कि नव संवत्सर हमारे लिए सुख एवं समृद्धि का प्रतीक है। यह ऋषियों की परम्परा है। यह वेद की परम्परा है। इस परंपरा को पुन: प्रसारित करने का श्रेय केवल महर्षि दयान्नद सरस्वती को जाता है। संसार में यदि सबसे पुराना

संसार की सबसे ...

ग्रन्थ कोई है तो वह वेद हैं और सबसे पुरानी अथवा प्रथम कोई ध्वनि है तो वह 'ओ३म्' की ध्वनि है जिसे नासा के वैज्ञानिकों ने सिद्ध करके दुनियां को दिखाया है।

पुरातनकाल में वेद की 1131 शाखाओं के विद्यमान होने की बात कही। उन्होंने बताया कि इस परम्परा को यदि किसी ने समझा और जाना तो वह केवल महर्षि दयानन्द थे जिन्होंने इस वेदज्ञान को पुन: प्रचारित किया हैं। महर्षि दयानन्द जी की शिष्य परम्परा में स्वामी श्रद्धान्नद सरस्वती, पं. लेखराम, पं. राम प्रसाद विस्मिल, लाला लाजपतराय और चाहे सरदार भगत सिंह रहे हों लेकिन आज उस परंपरा में पं. भगवद्दत्त जैसे वेद वैज्ञानिकों की भी आर्य जगत् में कमी आ गई। उस कमी को हमें पूरा करने के लिए महान पुरुषार्थ करना होगा। तभी हम 'पूर्णमद: पूर्णमिदम्' के रहस्य को समझेंगे। दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने समस्त भारतीयों को शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि- हमें नवसंवत्सर को सार्थक करना होगा, पाश्चात्य सभ्यता के परिवेश से निकल हमें भव्य भारत का निर्माण करना है तो हमें भारतवर्ष की चिरपरिचित संस्कृति सभ्यता को अपनाना ही होगा तभी हमारा सम्पूर्ण विकास संभव है।

समारोह के मुख्यातिथि श्री शिव भगवान लाहोटी जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि यह नवसंवत्सर का पर्व हमारे लिए प्रसन्नता, उत्साह और उन्नति का पर्व है। हमारी सभ्यता और संस्कृति को प्रचारित एवं प्रसारित करने का पर्व है।

साध्वी उत्तमायति जी (प्रधान संचालिका सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल) ने कहा कि नव वर्ष सम्पूर्ण भारत वर्ष में उत्साह पूर्वक मनाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि यह पर्व जहाँ धर्म, संस्कृति का प्रतीक है वहीं यह राष्ट्रीयता का भी प्रतीक है। इसका संरक्षण करना हमारा परम कर्त्तव्य है जिसके लिए आर्य वीर दल एवं आर्य वीरांगना दल व्यापक रूप से अपने उत्तरदायित्त्व को निष्ठापूर्वक वहनकर रहे हैं।

विशिष्ट अतिथि श्री सुमित लाहोटी (एम.डी.लाहोटी इंडस्ट्रीज) ने कहा कि नव वर्ष सब के लिए खुशियाँ लाता है, और हम सब के लिए हर वर्ष यह अपार खुशियाँ लाए। केन्द्रीय सभा के द्वारा किए इस आयोजन में आकर मुझमें उत्साह और उमंग का संचार हो रहा है। समारोह में केन्द्रीय सभा द्वारा आर्य समाज के क्षेत्र में विशेष योगदान एवं सेवा देने के लिए निम्नलिखित पुरस्कार प्रदान किए गए- जिनमें-

'श्री लालमन आर्य स्मृति पुरस्कार' - आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य श्री सनत्कुमार को आर्य समाज में विशिष्ट योगदान हेतु प्रदान किया गया।

'श्री धीरजभाई स्मृति पुरस्कार'- श्री राजेन्द्र पाल आर्य जी को कर्मठ कार्यकर्त्ता हेतु प्रदान किया गया।

इस अवसर पर दिल्ली की आर्य विद्या सभा के अंतर्गत संचालित आर्य विद्यालयों (आर्य वीरदल, आर्य वीरांगना दल) एवं आर्य गुरुकुलों के छात्र छात्राओं (आर्य वीर दल के वीरों तथा वीरांगनाओ) ने विभिन्न मनमोहक सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से दर्शकों को भावविभोर कर दिया। इन नाटिकाओं में सृष्टि प्रारंभ तथा वेद के प्रादुर्भाव से लेकर वर्तमान युग की क्रांति के परिदृश्य की झलकियाँ दृष्टिगोचर प्रतीत हुई। सांस्कृतिक कार्यक्रम में मुख्यत: एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग, आर्य वैदिक पाठशाला, प्रीतविहार व आर्य वीरदल प्रीत विहार, महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल न्यू मोती नगर तथा गुरु विरजानन्द संस्कृत कुलम् हरीनगर के ब्रह्मचारियों ने भी अपनी प्रस्तुतियाँ दी। इस अवसर पर गुरुकुल, दयानंद विहार ,आर्य वीरांगना, जनकपुरी सी - 3 के बच्चों ने सुन्दर गीत किए।

कुमारी नन्दिता आर्या ने होलीमंगल मिलन समारोह की याद ताजा कराते हुए 'घर-घर यज्ञ-हर घर यज्ञ' योजना का संकल्प दोहराया और एक व्यक्ति के द्वारा 12 माह में 12 नए परिवार यज्ञ से जोड़ने का प्रारूप नाटिका के माध्यम से प्रस्तुत किया।

इन सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ ही 17 फरवरी 2015 में ऋषि बोधोत्सव पर आयोजित खेल कूद प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए।

जिनमें प्रथम पुरस्कार - महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, आर्य समाज शादीपुर दिल्ली।

द्वितीय पुरस्कार - आर्य मॉडल स्कूल आर्य समाज आदर्श नगर

तृतीय पुरस्कार - आर्य अनाथालय आर्य समाज पटौदी हाउस।

को प्रदान किए गए। महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.) ने बालकों को पुरकार वितरित करते हुए आशीर्वाद दिया और उनके उज्वल भविष्य की कामना की और साथ ही समस्त भारतीयों को नववर्ष की शुभकामनाएं दीं।

दिल्ली सभा द्वारा संचालित गुरु विरजानन्द संस्कृत कुलम् के छोटे-छोटे ब्रह्मचारियों ने अपने आचार्य धनंजय जी के सानिध्य में सस्वर मन्त्रोचार कर सबको आश्चर्य चकित कर दिया।

दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने ब्रह्मचारियों के मन्त्रोचारण से आहलादित होते हुए दिल्ली सभा की आगामी कार्य योजना में बालिकाओं के लिए भी एक संस्कृत कुलम् संचालित करने का आह्वान किया जिससे बालकों के साथ-साथ बालिकाएँ भी संस्कृत सम्भाषण में प्रवीण होकर वेद विज्ञान को साक्षात् करें, महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को साकार करें, और आर्य समाज की मान्यताओं को घर-घर में पहुंचाएँ जिससे सम्पूर्ण राष्ट्र श्रेष्ठ बन जाए। मंच का कुशल संचालन केन्द्रीय सभा के यशस्वी महामन्त्री श्री राजीव आर्य जी ने किया और महाराष्ट्र तथा हरियाणा में 'गोहत्या बन्दी कानून लागू करने पर सरकार का धन्यवाद किया और इस कानून को सम्पूर्ण भारत में लागू करने की सरकार से अपील की और पूरे जनसमुदाय की स्वीकृति प्राप्त की। अन्त में शन्ति पाठ के साथ समारोह का समापन हुआ।

समारोह के इस अवसर पर दिल्ली सभा के वैदिक साहित्य के स्टाल पर आर्य समाज के सुविख्यात विद्वानों द्वारा रचित साहित्य उपलब्ध रहा । जिसमें वेदों की डी.वी.डी., ईश भक्ति ऋषि भक्ति तथा राष्ट्र भक्ति के सुमधुर गीतों की सी.डी./डी.वी.डी. तथा पं. रामचन्द्र देहलवी जी के मूल स्वर की सी.डी. मात्र 30 रुपये में उपलब्ध कराई गई। गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के उत्पाद च्वनप्राश, आवलाकैंडी, ऑवला रस, एलोविरा एवं अन्य अनेक स्वास्थ्य वर्धक टोनिक एवं ओषधि स्टॉल पर कम कीमत पर उपलब्ध कराए गए। वैदिक बाल साहित्य तथा 'घर-घर यज्ञ- हर घर यज्ञ' हेतु दिल्ली सभा द्वारा तैयार की गई किट मात्र 70/- रु. में वितरित की गई। उपरोक्त साहित्य को प्राप्त करने के लिए दिल्ली सभा के विक्रय विभाग प्रभारी श्री विजय आर्य जी से मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क कर प्राप्त कर सकते हैं।

पृष्ठ 1 का शेष

में शिक्षा के लिए भेजे गए, जहाँ सब को समान शिक्षा मिली। कोई भेदभाव नहीं, धनवान् और निर्धन का कोई प्रश्न नहीं था। विद्या जीवन को उच्च, श्रेष्ठ और महान बनाती है। आज के समाज में शिक्षा का अर्थ बदल गया है। वर्तमान शिक्षा में असमानता, महंगापन, आदर्शहीनता, जीवन से दूरी, अपनी सभ्यता संस्कृति से घृणा आदि अवगुण आ रहे हैं।

शिक्षा चरित्र, जीवन और संस्कारों से जुड़ी हो, शिक्षा में मानव को मानव बनाने वाले विचार हों। शिक्षा-स्थल प्रकृति की गोद में हों जिससे विद्यार्थी विषय-वासना, श्रृंगार और दुर्व्यसनों से बच सकें। शिक्षा से ही राम के चरित्र में दैवीय गुणों का विकास हुआ। शिक्षा के बाद राम यज्ञ के रक्षार्थ महर्षि विश्वामित्र के साथ वन जाते हैं। इस घटना से संकेत मिलता है कि प्राचीनकाल में क्षत्रिय बालक कितने बलशाली, पराक्रमी, निर्भीक और ब्रह्मचर्य के व्रती होते थे। छोटी-सी आयु में राम और उनके भाई ने ताड़का राक्षसी और कई उपद्रवी राक्षसों को मारा। बड़ी वीरता, दृढ़ता और निर्भयता से यज्ञ की रक्षा की। इससे हमें प्रेरणा लेनी चाहिए कि हमारे बच्चों में ब्रह्मचर्य, बल, तेज तथा क्षात्रधर्म के प्रति लगाव हो, अन्याय का विरोध तथा उसे मिटाने की भावना जागृत हो। उसके बाद राम और लक्ष्मण महर्षि विश्वामित्र के साथ मिथिला जाते हैं। यहीं विवाह का वर्णन है। उस काल में स्वयंवर की प्रथा थी। नारी को अपना जीवन-साथी चुनने का पूर्ण अधिकार था। वर और वधू ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए गृहस्थाश्रम को सुख से व्यतीत करते थे। विवाह भोग-विलास के लिए न होकर श्रेष्ठ कर्मों और सन्तान-प्राप्ति के लिए होता था।

मर्यादा पुरुषोत्तम...

राम के विवाह के आदर्श से आज के मानव को प्रेरणा और आदर्श मिलता है कि विवाह गुण, कर्म और स्वभाव के आधार पर करें। नारी भी पुरुष के समान अपने अधिकार के लिए स्वतन्त्र है।

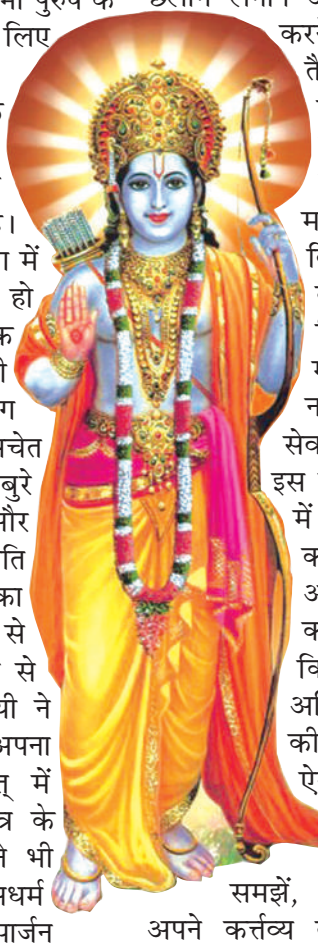

विवाहोपरान्त राम के राज्याभिषेक का उल्लेख है, परन्तु कैकेयी के आदेश से राम का वनगमन होता है। श्री राम के असहज वियोग में राजा दशरथ की मृत्यु हो जाती है। इससे स्पष्ट है कि कैकेयी ने जो मंथरा की सलाह मानी, वह प्रसंग आज के नर-नारी को सचेत करता है कि नीच, बुरे विचारों, कुसंस्कारों और कुकर्म वाले की संगति सदैव पतन और दु:ख का कारण बनती है। कुसंग से कार्य बिगड़ता है। सत्संग से व्यक्ति सुधरता है। कैकेयी ने मंथरा की बात मानकर अपना सुहाग नष्ट किया। जगत् में अपयश लिया। जिस पुत्र के लिए अधर्म किया, उसने भी बुरा कहा। जो लोग अधर्म तथा गलत तरीके से धनोपार्जन करते हैं उनका साथ सन्तानें नहीं देती हैं। राजा दशरथ ने मृत्यु को स्वीकार किया किन्तु वचन से विचलित नहीं हुए। इससे आज के मानव को वचन-निर्वाह की शिक्षा मिलती है कि दशरथ ने अपने प्राण-प्रिय राम को वनवास दिया किन्तु अपने वचन से डगमगाए नहीं। तभी तो रघुकुल का कीर्तिमान् वाक्य सर्वत्र उच्चारित होता है -

''रघुकुल रीति सदा चलि आई,
प्राण जाएँ पर वचन न जाई।'

राम के वनगमन का प्रसंग बड़ा ही मार्मिक और कारुणिक है। राम आदर्श पुरुष थे। उन्हें न राजतिलक होने का हर्ष था, न वन जाने का विषाद। राम का कथन है - 'मैं पिता की आज्ञा से समुद्र में कूदने, पहाड़ से छलाँग लगाने और अग्नि में प्रवेश करने के लिए हमेशा तैयार हूँ।' ये वाक्य राम की पितृभक्ति को युगों तक जीवित बनाए रखेंगे। आज मानव-समाज में विकट समस्या है कि बच्चे अपने माता-पिता का कहना नहीं मानते। अनुशासन में नहीं रहते। उनकी सेवा-सुश्रुषा नहीं करते। इस समस्या के समाधान में राम का चरित्र आज की युवा पीढ़ी के लिए अनुकरणीय है। राम ने कोई तर्क-वितर्क नहीं किया। कोई अपने अधिकार की माँग नहीं की, मात्र कर्त्तव्य देखा। ऐसे ही जो वृद्धजन हैं, वे भी अपने कर्त्तव्य को समझें, और युवाजन भी अपने कर्त्तव्य का पालन करें तो दु:खों और समस्याओं से छूटा जा सकता है।

इसी प्रसंग में सीता का साथ में वन जाना इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ देता है। वनवास राम को मिला था, सीता को नहीं, फिर भी सीता पति की अनुगामिनी बनी। सीता का यह कथन - 'पतिदेव ! यह कैसे हो सकता है कि आप तो वनों में रहें और मैं अयोध्या के महलों में अमन-चैन से रहूँ, आपके बिना मेरे लिए स्वर्ग का वैभव भी तुच्छ है। मैं छाया की भांति आपके साथ रहूँगी।' सीता का यह पवित्र पतिव्रत धर्म आज की भोग-विलास तथा श्रृंगार में फँसी नारी को युग-युग तक प्रकाश एवं जीवन दे सकता है। सीता ने अधिकार नहीं, कर्त्तव्य को देखा। हमारी संस्कृति में कर्त्तव्य अधिकार से ऊँचा माना गया है। जहां कर्त्तव्य-बोध है, वहां शान्ति, प्रसन्नता व सन्तोष है। जहाँ अधिकार की भावना है, वहाँ दु:ख, कलह व अशान्ति है।

इसी सन्दर्भ में लक्ष्मण का भाई हेतु वनगमन भाइयों की प्रीति का उत्कृष्ट प्रमाण है। ऐसी मधुर, प्रगाढ़ एवं त्यागमयी प्रीति आज के मानव को, जो भाई-भाई के रक्त का प्यासा हो रहा है, बहुत कुछ सोचने के लिए दे सकती है। श्रीराम तथा लक्ष्मण का प्रेम भातृ-प्रेम का आदर्श उदाहरण माना जाता है। टूटते हुए पारिवारिक सम्बन्धों को राम, लक्ष्मण और भरत जैसा प्रेमपूर्ण त्याग ही जोड़ सकता है।

भरत का त्याग, आदर्श भ्रातृभक्ति और हृदय की पवित्रता संसार के इतिहास में कहीं नहीं मिलेगी। भरत कुविचार वाली अपनी माता को वैरिन समझते हैं। उन्हें राजभोग, सुख-विलास कुछ अच्छा नहीं लगा। राजगद्दी राम और भरत के बीच ऐसे एक-दूसरे की ओर फेंकी जा रही है जैसे बच्चे गेंद उछालते हैं। भरत को राज्य की चाह नहीं है, राम अपने संकल्प एवं वचन पर अडिग है। इस त्याग ने दोनों को महान् बना दिया। जहाँ त्याग की भावना रहती है, वहाँ प्रेम, सौहार्द, सम्मान और आदर्श रहते हैं। भरत द्वारा राम की पादुकाएँ राज सिंहासन पर रखकर सेवक की तरह कार्य करना राजनीतिज्ञों को आदर्श शिक्षा दे रहा है कि स्वार्थ व व्यक्तिगत द्वेषों से ऊपर उठें और जीवन में त्याग की भावना लाएँ। तभी व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र का निर्माण हो सकता है। लोभ एवं स्वार्थ से ऊपर उठकर ही सच्ची सेवा हो सकती है। इसके पश्चात् राम,

...शेष पृष्ठ 6 पर

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में ऋषिबोधोत्सव सहर्षोल्लास संपन्न

दिनांक 11 फरवरी से 28 फरवरी 2015 तक इस वर्ष ऋषि बोधोत्सव उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। ऋग्वेद पारायण यज्ञ 11 फरवरी से टंकारा स्थित उपदेषक विद्यालय के आचार्य ११हुए अपने टंकारा प्रवास के दिनों की याद करते हुए अपने संस्मरण सुनाए।

वैदिक परिवार निर्माण सम्मेलन एवं भक्ति संगीत सम्मेलन रात्रि 8-30 बजे से 10-30 बजे तक आयोजित किया गया। दिनांक 17 फरवरी 2015 को शिवरात्रि एवं बोधोत्सव का मुख्य कार्यक्रम रहा जिसमें प्रात: 8-30 बजे पूर्णाहुति का यज्ञ आरम्भ किया गया। इसमें मुख्य यजमान के रूप में श्रीमती एवं श्री एस के शर्मा, श्री योगेश मुंजाल, श्री सुधीर मुंजाल, श्री अरूण अब्रोल एवं श्री लधाभाई पटेल उपस्थित थे। ट्रस्ट के वयोवृद्ध श्री

लधाभाई पटेल ने ट्रस्ट की ओर से पगड़ी पहना कर उनका स्वागत किया तदुपरान्त भारत से आए हुए लगभग 125 आर्य महानुभावों ने उन्हें फूलमाला अर्पित कर उनका सम्मान किया। अपराह्न 3 बजे से 5 बजे तक विशेष श्रद्धांजलि सभा का आयोजन श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल ;प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात की अध्यक्षता में किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में गुजरात के राज्यपाल महामहिम श्री ओम प्रकाश कोहली जी सपत्नीक उपस्थित थे। इस अवसर पर डॉ. विनय विद्यालंकार एवं श्री एस के शर्मा जी का विशेष प्रवचन हुआ। इस वर्ष आर्य समाज जामनगर के श्री अविनाश भक्र जी को टंकाररत्न की उपाधि से अलंकृत किया गया। इसी अवसर पर स्वामी संकल्पानन्द स्मृति सम्मान स्वामी शान्तानन्द भुज को दिया गया जोकि प्रतिवर्ष इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई की ओर से दिया जाता है। महामहिम राज्यपाल श्री ओम प्रकाश कोहली जी को गुजरात राज्य की ओर से श्री वाचोनिधी आर्य गांधीधाम की ओर से विशेष कच्छ की पगडी एवं शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। इसी अवसर पर महामहिम राज्यपाल श्री ओम प्रकाश कोहली जी ने टंकारा ट्रस्ट की मासिक पत्रिका टंकारा समाचार के ''ऋषि बोधांक'' का लोकार्पण किया।

इसी अवसर पर स्वामी आर्येषानन्द सरस्वती द्वारा भारत भर से पधारे हुए संन्यासीवृन्दों एवं वानप्रस्थियों को शॉल एवं मानदेय देकर सम्मानित किया गया। आचार्य सत्यदेव पुरस्कार वितरण किया गया जिसके अन्तर्गत ब्रह्मचारी मनोरंजन को प्रथम, ब्रह्मचारी जगवीर को द्वितीय एवं ब्रह्मचारी अनूप को तृतीय पुरस्कार दिया गया।

पृष्ठ 5 का शेष

सीता और लक्ष्मण का तपस्वी वेष में, तृण-कुटिया बनाकर चित्रकूट में निवास करना वर्णित है। वे कन्द, मूल और फल खाते और तपस्वियों की तरह संध्या-यज्ञ एवं ऋषि-मुनियों की रक्षा करते हुए जीवन व्यतीत करने लगे। इसी अवसर पर रावण की बहिन शूर्पणखा का श्रीरामचन्द्र जी के समक्ष विवाह का प्रस्ताव रखने, श्रीराम द्वारा मना करने, अधिक हठ करने और सीता को मारने तक का उद्योग करने पर लक्ष्मण द्वारा उसकी नाक काट लेना आदि का वर्णन है। उक्त घटना से प्रेरणा मिलती है कि जैसे राम अपनी पत्नी सीता से ही सन्तुष्ट और पत्नीव्रती थे, ऐसे ही यदि हम सुखी रहना चाहते हैं तो हमें भी पत्नीव्रती बनना चाहिए। राम परस्त्रीगमन को अत्यन्त निकृष्ट और कुमार्गगामी मानते थे। वे एक स्त्री से अधिक से विवाह करना, पाप, अधर्म, मर्यादाहीनता और समाज को दूषित करना मानते थे।

आज के सभ्य समाज में ये दोनों रोग भयंकर रूप से फैल रहे हैं। परस्त्री के भोग की प्रवृत्ति से व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र टूट रहे हैं। पंचवटी के आस-पास कई बड़े-बड़े राक्षस रहते थे। इन राक्षसों में रावण का मित्र मारीच था। वह बड़ा धूर्त और विचित्र वेश बनाने में निपुण था। मारीच सोने के हिरण का वेश बनाकर राम की कुटिया के आगे से होकर निकला। सीता उस सुन्दर मृग को देखकर मोहित हो गई। उसने राम से कहा- ' इसे पकड़ लाइए। यह हमारी क्रीड़ा के लिए रहेगा। वनवास की समाप्ति पर मैं इसे साथ ले जाऊंगी।' इत्यादि। राम लक्ष्मण को कुटी पर सीता की रक्षा के लिए छोड़कर मायावी मृग के पीछे दौड़े। कुटी आँख से ओझल हो गई। राम ने उस मायावी मृग को बाण मारकर समाप्त कर दिया। मरते समय वह चिल्लाया - हाय लक्ष्मण, हाय सीता।

यह आवाज सुनकर सीता चिन्तित हो उठी। लक्ष्मण ने बहुत समझाया कि यह राम की आवाज नहीं है। यह मायावी मृग की माया है। सीता ने लक्ष्मण को जोर-जबरदस्ती डाँटकर राम की सहायता के लिए भेज दिया।

लक्ष्मण के जाते ही रावण साधु का वेश बनाकर सीता के पास भिक्षा के लिए आया। कुटी से बाहर सीता के आते ही उन्हें उठाकर लंका की ओर ले गया। इस घटना से हमें सीख लेनी चाहिए कि किसी के बाह्य स्वरूप पर तुरन्त विश्वास नहीं कर लेना चाहिए। पहले सोच-विचार करके और प्रंसग समझकर ही आगे बात करें। आज हमारे समाज में बहुत लोग

ढोंगी, पाखण्डी तथा दिखावटी साधु बन रहे हैं। कदम-कदम पर धोखा, छल, असत्य, प्रपंच हो रहा है। सीता-हरण प्रसंग से प्रेरणा और संकल्प लें कि हम अपने अन्दर आसुरी प्रवृत्ति को नहीं बढ़ने देंगे। हमारे अन्दर बैठा हुआ रावण दिन-रात सीता को खोजने और भगाने की योजना में रहता है। आज समाज में नगर-नगर, गली-गली और घर-घर रावण बढ़ एवं पल रहे हैं। राम एक आदर्श महापुरुष थे। परमात्मा या ब्रह्म नहीं थे। उनके कर्म, चरित्र और आदर्श इतने उच्च और महान् थे कि श्रद्धा-भक्ति तथा आदर में हम उन्हें भगवान् कहते है। किसी को भगवान् शब्द से सम्बोधन करना, सबसे बड़ा तथा उच्च सम्मान देना है। यदि वह भगवान् होते तो साधारण मनुष्य की तरह पशुओं-पक्षियों और लताओं तथा वृक्षों से विलाप करते हुए सीता का पता न पूछते। श्रीराम के जीवन तथा आचरण में सभी देवोचित गुण, कर्म और स्वभाव थे। वे मानवता के आदर्श थे। रामायण कहती है कि श्रीराम के समान अपना जीवन तथा व्यवहार बनाओ।

किष्किन्धा में सीता अपने आभूषणों को पहचान के लिए फेंकती गई जिससे रामचन्द्र जी को उसे खोजने में प्रमाण मिल जाए। राम सीता के आभूषणों को हाथ में लेकर लक्ष्मण से पूछने लगे- 'ये आभूषण तुम्हारी भाभी के ही हैं न ?' इस पर लक्ष्मण ने बड़ी नम्रता-पूर्वक उत्तर दिया - 'ऊपर के अंगों में पहने जाने वाले आभूषणों के बारे में मैं कुछ भी नहीं जानता हूँ। केवल पैरों के पायजेबों के सम्बन्ध में कह सकता हूँ कि ये माता सीता के ही हैं, क्योंकि प्रातः चरण-वन्दना करने के कारण इनकी मुझे पहचान है।' रामायण का यह प्रसंग आज के मनचले, कामी तथा वासनाओं में फँसे युवकों को पुकार-पुकार कर कह रहा है कि रामायण और रामलीला से कुछ सीखना है तो चरित्र-निर्माण और विचारों की उच्चता, दिव्यता एवं पवित्रता सीखो। हमारी आँखों में वासनाएँ भरी हैं। ऐसी दशा में लक्ष्मण का आदर्श एवं सात्विक चरित्र आज के कामुकता एवं वासना में लिप्त समाज को बहुत कुछ प्रेरणा और आदर्श दे सकता है।

रावण सीता को लंका की ओर लिए जा रहा था। सीता रथ से कूदने लगी। तब रावण बोला - 'थोड़ी देर में लंका पहुँच जाओगी। वहां ऐसे सुख-ऐश्वर्य मिलेंगे कि वन के जीवन को भूल जाओगी। कुटी के बदले आसमान को चूमता महल मिलेगा, जिसका फर्श चांदी का और दीवारें सोने की हैं और जहाँ गुलाब और कस्तूरी की सुगन्ध आठों पहर उठा करती है। एक भिखारी पति के बदले तुम्हें ऐसा पति मिलेगा जिसकी उपमा इस धरती पर नहीं है। सीता बोली- 'छली, कपटी, जबान संभाल कर बोल। सती के साथ ऐसा व्यवहार तेरे काल का कारण बनेगा। तू अपने धन-ऐश्वर्य से मुझे लुभा नहीं सकता। मैं पतिव्रता हूँ। मेरे आराध्य राम ही हैं।'

आज अपने को आधुनिक कहलाने वाली, भोग-विलास, शृंगार और ऐशो-आराम ही जिनके जीवन का लक्ष्य है, ऐसी नारियों को सीता का यह आदर्श चरित्र, त्याग तथा पतिव्रता धर्म नया जीवन दे सकता है। सीता में एक आदर्श नारी के सभी गुण विद्यमान थे। वह पत्नी, भाभी, माँ आदि सभी भूमिकाओं की कसौटी पर पूरी उतरी।

हनुमान् जी ने अनेक संकटों एवं कठिनाइयों को पार करके अशोक-वाटिका में सीता को रामनाम अंकित अंगूठी दी। हनुमान् जी एक कुशल सेनापति थे। उन्हें इच्छानुसार रूप बदलने और हल्का भारी हो जाने की सिद्धि प्राप्त थी। श्रीराम ने लक्ष्मण से हनुमान् के बारे में कहा था - 'अवश्य ही यह व्यक्ति वेदशास्त्रज्ञाता, व्याकरणवेत्ता, उच्चकोटि का विद्वान् और कुशाग्रबुद्धि है।' वस्तुतः हनुमान् जी बली, योद्धा और पूर्ण ब्रह्मचारी थे। उनके चरित्र में सच्चे मित्र और सेवक के गुण थे। उन्होंने अपने प्राणों की बाजी लगाकर मित्रता का मोल चुकाया। इसीलिए वे आज संसार में पूजित, सम्मानित एवं वन्दनीय हैं।

राम रावण का घमासान युद्ध होता है। भयंकर नर-संहार में रावण का समूल कुल नष्ट हो जाता है। राम लंका का राज्य विभीषण को सौंपकर दलबल सहित अयोध्या लौट आते हैं। रावण पुलस्त्य ऋषि का पौत्र था। शिव का परम भक्त था। वेदों और शास्त्रों का ज्ञाता था। किन्तु मांस-मदिरा और पर-स्त्री गमन से उसकी पदवी राक्षस हो गई थी। रावण आचार- विचार से पतित होकर सर्वनाश को प्राप्त हुआ। आज के मानव-समाज में रावण-वृत्ति तेजी से फैल रही है।

आज का मानव दानव बनकर मांस, मदिरा, पर स्त्रीगमन, छल, प्रपंच, अधर्म, पाप आदि बुराइयों को जीवन का अंग बनाता जा रहा है, किन्तु भूल रहा है कि गलत मान्यताओं और दुराचरण से अन्त में रावण की तरह विनाश ही होता है। अन्याय, अधर्म, असत्य और दानवीय वृत्तियाँ पहले तो रावण की तरह मनुष्यों को फलता-फूलता दिखाती है किन्तु अन्त में उसे समूल नष्ट कर देती हैं।संक्षेप में रामायण और राम का अमर सन्देश आज के भूले-भटके तथा राक्षसी-वृत्तियों की ओर बढ़ते मानव-समाज को यही है कि' अपने जीवन को उच्च, पवित्र, धार्मिक, तपस्वी, त्यागी एवं आदर्शपूर्ण बनाओ और बुरे विचारों व कर्मों का परित्याग करो। मांस, मदिरा, परस्त्रीगमन के आचरण से ऊपर उठो। आचरण को सुधारो।' श्रीराम तथा रामायण हमें संसार में कैसे जीना है, इसकी शिक्षा और मार्गदर्शन कदम-कदम पर दे रहे हैं। यदि मानव अपने इहलोक तथा परलोक - दोनों को सुधारना व सम्भालना चाहे तो श्रीराम का प्रेरक जीवन-चरित्र सबसे बड़ा आदर्श है।

डॉ. महेश विद्यालंकार
- बी.जे.29, शालीमार बाग, दिल्ली

आर्य समाज के इतिहास की प्रेरक घटना

मॉरीशस में आर्य समाज की स्थापना

जब सैनिक विद्रोह पर तुल गये पूज्यपाद स्वामी स्वतंत्रानंदजी महाराज ने लिखा है कि मारीशस में आर्य समाज की स्थापना उसी भांति हुई जैसे हवा कहीं से किसी बीज को उड़ाकर ले जाए और किसी दूर की भूमि पर जा पटके और वहीं बीज वहीं उग आये।

मारीशस में आर्य समाज का बीज बोने और उसे अंकुरित करने वाले महारथी थे-श्री रामशरणजी मोती, वीर खेमलालजी वकील, श्री केहरसिंह (गांव चिदा, जिला फिरोजपुर, पञ्जाब), श्रीरामजीलाल तथा श्री चुन्नीलाल आदि (चीमनी, जिला हिसार, हरियाणा के), श्री हरनामसिंह (झज्जर, हरियाणा के) श्री मंसासिंह जी जालंधर, जिला पञ्जाब के तथा श्री प्रसाद गोपालजी आदि मारीशस-निवासी थे।

श्री रामशरणजी मोती ने पञ्जाब से कुछ पुस्तकें मंगवाई थीं। उनमें रद्दी में आर्यपत्रिका लाहौर के कुछ पन्ने थे। इन्हें पढ़कर वे प्रभावित हुए। उस दुकानदार से उन्होंने आर्यपत्रिका का पता लगाया। इस पत्रिका को पढ़ते-पढ़ते वे आर्यसमाजी बन गये। साहस के अंगारे वीर खेमलालजी के आर्य बनने की कहानी विचित्र है। एक सैनिक टोली मारीशस आई। उनमें कुछ आर्यपुरूष भी थे। उनकी बदली हो गई। जाते-जाते वे कुछ पुस्तकें वहीं दे गये। श्री भोलानाथ हवलदार एक सत्यार्थप्रकाश की प्रति श्री खेमलाल को दे गये। श्री खेमलाल सत्यार्थप्रकाश पढ़कर दृढ़ आर्य बन गये। श्री रामशरण मोती ने रिवरदी जांगील में आर्य समाज का आरंभ किया तो खेमलालजी ने मारीशस की राजधानी पोर्ट लुइस व क्यूर पाइप में वेद-ध्वजा फहरा दी। पोर्ट लुइस के आर्य पुरूष एक होटल में एकत्र होते थे। ये लोग पाखंड-खंडन खूब करते थे। पोप शब्द तो सत्यार्थ में है ही। वीतराग स्वामी स्वतंत्रानंदजी महाराज ने लिखा है कि इन धर्मवीरों ने पोप के अनुयायियों के लिए पोपियां शब्द और घड़ लिया। मेरी पाठकों से, आर्य कवियों से व लेखकों से सानुरोध प्रार्थना है कि मारीशस के उन दिलजले दीवानों की स्मृति को स्थिर बनाने के लिए पोप के चेलों के लिए पोपियां शब्द का ही प्रयोग किया करें। इस शब्द को साहित्य में स्थायी स्थान देना चाहिए। अभी से गद्य के साथ पद्य में भी इस अद्भुत शब्द के प्रयाग का आंदोलन मैं ही आरंभ करता हूं -

विश्व ने देखा कि पोपों के सभी गढ-ढह गये।

पोप दल और पोपियां सारे बिलखते रह गये।।

वेद के सद्ज्ञान से फिर लोक आलोकित हुआ।

मस्तिष्क मन मानव का जब फिर धर्म से शोभित हुआ।

पुरोहित की आवश्यकता

श्रद्धानन्द अनाथालय ट्रस्ट करनाल में एक विवाहित वैदिक विद्वान् पुरोहित (आर्य समाज के विचारों वाला) की आवश्यकता है। आवास व भोजन नि:शुल्क, वेतन योग्यतानुसार। योग्यता (शास्त्री) गुरुकुल स्नातक हो शीघ्र सम्पर्क करें। **-प्रबन्धक, मो. 9416566429**

41वां वार्षिकोत्सव समारोह

आर्य समाज मंदिर मदनगीर, **दिनांक**- 27 से 29 मार्च, **यज्ञ**- प्रात: 8.00 बजे, **भजन व प्रवचन** - 10.00 से 1.00 बजे, **ब्रह्मा**- आचार्य डा. प्रकाशवीर शास्त्री, **मुख्य वक्ता**- डा. कैलाश शास्त्री

मंत्री, अनन्त राम आर्य

113 वाँ वार्षिकोत्सव संपन्न

आर्य समाज अरनियां खुर्द (बु0शहर) **दिनांक**- 20 से 23 मार्च, **यज्ञ**- प्रात: 8.00 बजे, **भजन एवं प्रवचन दोपहर** 1.30 से 5.00 बजे तथा रात्रि 7.00 से 10.00 बजे, **मुख्य वक्ता**- आचार्य प्रेमपाल शास्त्री (गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार), **भजनोपदेशक**- श्री राम अवतार आर्य (अलीगढ़) व सुश्री मनोरमा शर्मा जी (अतरौली)।

29वां वार्षिकोत्सव संपन्न

आर्य समाज रायपुर (धीरजपुर) दातागंज बदांयू का 29वां वार्षिकोत्सव दिनांक 25 और 26 फरवरी 2015 तक समारोह संपन्न हुआ। जिसमें नित्य प्रात: 8.00 से 11.00 बजे तक भजन उपदेश हुए। जिसमें आचार्य विजय देव गुरूकुल कोठरा के उपदेश एवं पं. उदयराज आर्य भजनोपदेशकों के समधुर भजनोपदेश से श्रोता कृतकृत्य हुए।

प्रधान आर्य समाज

49वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज रोहताश नगर दिल्ली-32, दिनांक 2 से 5 अप्रैल 2015, यज्ञ एवं प्रवचन- प्रात: 6.30 बजे, सायं 5.30 बजे, ब्रह्मा एवं वक्ता - आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी, भजनोपदेशक - प. कुलदीप आर्य (बिजनौर) (2 से 4 अप्रैल), आर्य महिला सम्मेलन- दोपहर 12.30 बजे/ (2 अप्रैल), अध्यक्षता- श्रीमती उषा किरण आर्या, (उप प्रधाना- आर्य केंद्रीय सभा), मुख्य वक्ता- डा. संध्या शर्मा (प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि. दिल्ली), यज्ञ पूर्णाहुति - प्रात: 9:00 बजे, समारोह संपन्न - दोपहर 1.00 बजे, मुख्यातिथि - सुश्री सरिता सिंह (विधायक रोहताश नगर), श्री विनय आर्य (महामंत्री दि.आ.प्र. सभा), श्री राजीव आर्य- महामंत्री (केंद्रीय सभा)।

117वां वार्षिकोत्सव मनाया

आय समाज खड़ाअफगान जनपद सहारनपुर में 117वें वार्षिकोत्सव पर धर्म जागृति महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ ओ३म की पताका आरोहण और यज्ञ से हुआ। दिल्ली से पधारे पूर्व आईएएस अधिकारी आनंद प्रकाश मित्तल परिवार सहित यज्ञमान बने। बिजनौर से पधारे आचार्य विष्णु मित्र वेदार्थी ने कहा कि आर्य सत्य की राह दिखाने वाला होता है। ईश्वर सर्वोपरि और न्यायकारी है। आचार्य रणवीर शास्त्री ने कहा कि वेद मंत्रों का अर्थ जानना आवश्यक है। हम सभी को गायत्री मंत्र का अर्थ जानकर गायत्री का चिंतन करना चाहिए। आर्य भजनोपदेशक योगेश दत्त आर्य बिजनौर वालों तथा ऋषिपाल आर्य ने भजनों के माध्यम से विचार रखते हुए आर्य समाज पर तथा महर्षि दयानंद के आदर्शों पर चलने का आह्वान किया।

-आदित्य प्रकाश गुप्त

74वां वार्षिकोत्सव संपन्न

आय समाज दातयाना मुजफ्फरनगर का 74वां वार्षिकोत्सव 1 से 2 मार्च 2015 तक मनाया गया। इस अवसर पर वैदिक विद्वान डॉ. धीरज कुमार शास्त्री, स्वामी सत्यवेश जी, स्वामी वृध्नानंद सरस्वती के उपदेश एवं भजनोपदेशक सहदेव सिंह बेधड़क, पं. योगेशदत्त आर्य बिजनौर एवं रवीन्द्र सिंह, श्री ब्रह्मानन्द जी के भजनोपदेश ने श्रोताओं को भाव-विभोर किया। समारोह में पधारे वैदिक धर्म के मर्मज्ञ पूज्य आचार्य स्वामी वृध्नानन्द सरस्वती जी संचालक आचार्यकुल ऋतस्थली पचैण्डा खुर्द ने समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि आर्य समाज एक विचारधारा है जो महर्षि दयानंद सरस्वती के मंतव्यों तथा वेद से पूर्णत परिपोषित है। महर्षि ने अपने जीवन में अनेक दारूण दु:खों को सहन करते हुए, वेद ज्ञान की ज्योति को पुन: प्रज्ज्वलित किया। अपने कालजयी ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से सत्यार्थ का प्रकाश किया इसका प्रतिफल हुआ कि परतंत्रता का अंधकार हटा और स्वतंत्रता रूपी आलोक में भारत वर्ष उन्नति को प्राप्त होने लगा। जीवन उत्थान की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि मानव को अपने जीवन में संयमपूर्वक जीवन को जीना चाहिए क्योंकि ब्रह्मचर्य से जीवन के अलभ्य सुख, वेद ज्ञान का साक्षात् और मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। वेद भी हमें यहीं संदेश देता है **आचार्यो ब्रह्मचर्येण ब्रह्मचारिणमिच्छते** अर्थात् एक आचार्य अपने शिष्य में ब्रह्म की कामना करता है, तभी उनका जीवन उज्ज्वलता को प्राप्त होता है। **-मंत्री, आर्य समाज**

गुरूकुल हरिपुर द्वारा वेद प्रचार कार्यक्रम

ओड़िशा के कोरापुट जिला में गो हत्या एवं गो मांस खाने के नाम से तथा गरीबी के कारण प्रसिद्ध हैं। जिसका लाभ विभिन्न मत-सम्प्रदाय वाले थोड़े से प्रलोभन देकर अपना-अपना मत सम्प्रदाय के विस्तार में लगे हुए हैं। अत: यहां के लोग गो माता की महत्ता को समझें, मानवीय कर्तव्यों तथा आर्य समाज के सिद्धांतों से परिचित होंवें। इसी पावन भावना से गुरूकुल हरिपुर, जुनानी ओड़िशा के तत्त्वावधान में 27-28 फरवरी 2015 को नवरंगपुर जिला के नुआगुड़ा एवं कोरापुट जिला के बाइलगुड़ा व अण्डारगुड़ा को केंद्र बनाकर दान सहायता शिविर एवं प्रचार कार्यक्रम संपन्न हुआ जिसमें विभिन्न गांवों के दो हजार महानुभावों को आर्य समाज एवं वेद से परिचय कराया गया, 10 परिवारों को वैदिक धर्म में दीक्षित कराया गया, सैकड़ों महानुभावों को यज्ञ में आहुति प्रदान कर मांस, मदिरा आदि अभक्ष्य पदार्थों का सेवन नहीं करने का व्रत दिलाया गया, तीनों केंद्रों में यज्ञ एवं वेद प्रवचन कार्यक्रम के उपरांत छ:सौ निर्धन परिवारों को 25-25 किलो चावल एवं एक-एक साड़ी दान स्वरूप प्रदान किया गया। यह समस्त कार्यक्रम गुरूकुल हरिपुर के संचालक डा. सुदर्शन देव आचार्य के मार्गदर्शन व प्रेरणा से श्री विजय कुमार लाहोटी रायपुर, समाजसेवी श्री सोमनाथ पात्र बालेश्वर की पावन उपस्थिति में गुरूकुल के प्रबंधक श्री धर्मराज तथा स्थानीय सेवाभावी महानुभावों के पुरूषार्थ से सुसंपन्न हुआ।

अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में डॉ. श्वेतकेतु ने पढ़ा शोध पत्र

आर्य समाज बिहारीपुर के मंत्री व आयुर्वेद संस्कृत विद्वान् डॉ. श्वेतकेतु शर्मा ने राष्ट्रीय भाषा संस्थान व भगवानदीन आर्य कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लखीमपुर खीरी के द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी 7-8 फरवरी 2015 को संस्कृत भाषा में लिखा वैदिक संस्कृत वाङ्मय वैज्ञानिक शोध **चिन्तनम्** विषय पर मुख्य वक्ता के रूप में शोध पत्र प्रस्तुत किया। डॉ. शर्मा ने अपने शोध पत्र में सप्रमाण सिद्ध किया कि वेदों में विज्ञान, आयुर्वेद के विभिन्न आयाम आदि अनेकों विषयों की चर्चा है। यहां कानपुर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. जे. वी. वैशम्पायन, अध्यक्षा डा. विभा अग्निहोत्री उपस्थित रहे।

स्वामी सर्वानन्द जी के 115वें जन्म दिवस पर

सामवेद पारायण यज्ञ व आर्य महासम्मेलन

दयानन्द मठ, दीनानगर जिला- गुरदासपुर (पंजाब), (1-13 अप्रैल 2015) यज्ञ के ब्रह्मा- यतिन्द्र शास्त्री (12 अप्रैल 2015), वैदिक यतिमण्डल सम्मेलन 2 बजे से 5 बजे। यज्ञ पूर्णाहुति - 9:30 बजे (13 अप्रैल 2015), आर्य महा सम्मेलन 10 बजे से 1 बजे, अध्यक्षता - स्वामी सुमेधानन्द जी (सांसद सीकर), मुख्य वक्ता- श्री सरदारीलाल जी, जालंधर। **स्वामी सदानन्द सरस्वती**

गुमशुदा

मेरे भाई, श्री रामकृष्ण मित्तल पुत्र श्री माधोराम मित्तल निवासी ग्राम व डाक झिझांना जिला - शामली उ0प्र0 कि 2 वर्ष से कोई जानकारी नहीं हैं। 10 वर्ष पहले चोट लगने से विकंलाग हो गए थे। कृपया सूचना निम्न पते पर देने की कृपा करें।

- ब्रजभूषण मित्तल सुपुत्र माधोराम मित्तल, झिंझाना (शामली) मो. 8394051900, 09412639870

शोक समाचार

सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक प. शोभाराम प्रेमी का निधन

आर्य जगत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक प. शोभाराम प्रेमी का दिनांक 6 मार्च 2015 को निधन हो गया। वह 101 वर्ष के थे। उनकी श्रद्धांजलि सभा दिनांक 11 मार्च 2015 को आर्य समाज सूरजकुंड मेरठ में संपन्न हुई। श्रद्धांजलि सभा में तपोनिष्ठ सन्यासी स्वामी विवेकानंद जी, स्वामी धर्मेश्वरानंद जी तथा विविध स्थानों से आए हुए आर्य समाजों के अधिकारियों एवं आर्य भजनोपदेशकों ने प्रेमी जी के जीवन पर प्रकाश डाला।

श्रीमती सत्वन्ती देवी जी का निधन

श्रीमती सत्वन्ती देवी जी सदस्या आर्य समाज राजेंद्र नगर का 6.2.2015 सायं 6.15 बजे अपने निवास स्थान 4डी/6 ओल्ड राजेंद्र नगर में निधन हुआ। उनकी आयु 87 वर्ष थी। उनकी श्रद्धांजलि सभा आर्य समाज राजेंद्र नगर में 9.2.2015 को हुई।

श्याम किशोर पुरोहित का देहावसान

परोपकारिणी सभा में कार्यरत श्री कमलेश पुरोहित कम्प्यूटर ऑपरेटर के पिता श्री श्याम किशोर पुरोहित का देहावसान दिनांक 9 फरवरी 2015 को हो गया। उनकी आयु 68 वर्ष थी। वे धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति थे। आपका अंत्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से संपन्न हुआ। संस्कार में सभा के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

मनोज आर्य का हृदयाघात के कारण निधन

अत्यंत दुख का विषय है कि आर्ष गुरूकुल महाविद्यालय होशंगाबाद (म.प्र.) के स्नातक ग्रा. देवास (म.प्र.) निवासी श्री गोवर्धन लाला जी के छोटे सुपुत्र श्री मनोज आर्य का दिनांक 2 मार्च 2015 को दोपहर 11 बजे हृदयाघात के कारण निधन हो गया है। आपका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य संदेश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारूण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 23 मार्च से रविवार 29 मार्च, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2015–2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 26/27 मार्च, 2015

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015–2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 25 मार्च, 2015

ईश्वर का स्वरूप

विचार गोष्ठी

सामाजिक जागरूकता के लिए प्रख्यात शिक्षाविदों एवं दार्शनिकों का तर्कपूर्ण उद्बोधन

दिनांक : 5 अप्रैल 2015 (रविवार) को सायं 3:30 बजे से 8:00 बजे

स्थानः आर्य ओडिटोरियम, चन्द्रवती स्मारक ट्रस्ट, देसराज परिसर, (इस्कान मन्दिर के पास) सी -ब्लाक, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली

संगोष्ठी अध्यक्ष

प्रो.जे.एल. गुप्ता- पूर्व कुलपति जी.जी. विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.), पूर्व प्राचार्य, श्रीराम कालेज ऑफ कॉमर्स, दिल्ली विश्वविद्यालय

हिन्दु दर्शन

स्वामी राघवानन्द जी- प्रधान, श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा दिल्ली एवं प्रमुख उदासीन आश्रम, पहाड़ गंज, दिल्ली

इस्लाम दर्शन

प्रोफेसर एम.एच. कुरैशी- पूर्व प्रवक्ता जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, चेयर प्रोफेसर, ए.एम. ख्वाजा, चेयर, जामिया मिल्लिया इस्लामिया।

ईसाई दर्शन

डॉ. पी. जैकब चेरियन- विभागाध्यक्ष भौतिक विज्ञान विभाग, सेंट स्टीफेंस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह - एसोसिएट प्रोफेसर, सेंट जॉन कालेज, आगरा

वैदिक दर्शन

डॉ. वागीश आचार्य- प्राचार्य, आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय एटा, उत्तर प्रदेश

डॉ. विनय विद्यालंकार- एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत) राजकीय पी.जी. कॉलेज रामनगर, नैनीताल एवं वरिष्ठ उपाध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखंड

प्रतिष्ठा में,

क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर

पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक की अध्यक्षता में वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़ में 5 अप्रैल से 12 अप्रैल 2015 तक 8 दिन के योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है, इसमें आपका स्वागत है।

शिविरार्थी 5 अप्रैल को सायंकाल 4 बजे तक शिविर स्थल पर पहुंच जावें। शिविर शुल्क 1000 रुपए कृपया निम्न बैंक खाते में जमा करावें, नाम-क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर 2015, नंबर 01790100018052, शाखा बैंक ऑफ बड़ौदा, धनसुरा जिला अरवल्ली

सपंर्क सूत्र - 02770-287417-9427059550

'आस्था' पर प्रेरक वैदिक प्रवचन – प्रतिरात्रि : 9:30 बजे

प्रत्येक सोमवार एवं मंगलवार	– आचार्य ज्ञानेश्वरार्य	(प्रेरक–प्रवचन)
प्रत्येक बुधवार	– डॉ0 कमलेश कुमार अग्निहोत्री	(प्रेरक–प्रवचन)
प्रत्येक गुरुवार	–डॉ0 विनय विद्यालंकार	(व्यक्तित्व–विकास)
प्रत्येक शुक्रवार व शनिवार	– डॉ0 वागीश आचार्य	(प्रेरक प्रवचन)

11वां वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में 11 वां वैवाहिक आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन 3 मई 2015 को आर्य समाज विवेक विहार नई दिल्ली में आयोजित होगा। समस्त आर्य परिवारों से निवेदन है कि अपने विवाह योग्य हो चुके पुत्र-पुत्रियों एवं संबंधियों का पंजीकरण अवश्य करवाएं। पंजीकरण की अंतिम तिथि 20 अप्रैल है। रजिस्ट्रेशन फार्म **www.thearyasamaj.org** से भी डाउनलोड किया जा सकता है। रजिस्ट्रेशन शुल्कमात्र-200 रुपये है। सम्मेलन स्थल पर तत्काल पंजीकरण की भी सुविधा उपलब्ध होगी। विशेष जानकारी हेतु राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुन देव चड्ढा जी से (09414187428) इस पर संपर्क करें।

एस.पी. सिंह संयोजक, दिल्ली।

मो. 09540040324

प्रेरणा दायक कार्य

आर्य समाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी की स्थापना के 31 वर्षों में रविवारीय साप्ताहिक सत्संग की संख्या 200 से अधिक रही। उसका श्रेय यजमान बने युवा साथी शैलेश जी, जो सूचना तकनीक के विशेषज्ञ भी है एवम् आर्य समाज के प्रधान श्री वेदप्रकाश जी को जाता है। इन्हीं दोनों महानुभावों के अथक प्रयासों से ही यह उपलब्धि प्राप्त हुई।

प्रवेश आरंभ

युग जागृति वैदिक गुरूकुल, गुड़गांव, हरियाणा में आधुनिक एवं प्राचीन शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त गुरूकुल संचालित है। यह संस्थानपूर्णतः आवासीय है। व्याकरण के साथ-साथ अन्य सभी आधुनिक विषयों का नवीन शैक्षिक तकनीकी के द्वारा गहनता से अध्ययन कराया जाता है।

संपर्क : 09810545951, 8750614501

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक धर्मपाल आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1, टैलीफैक्स : 23360150, 23365959, **E-mail : aryasabha@yahoo.com** से प्रकाशित किया।

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह